Journal of Religion & Film

Volume 20
Issue 1 *The 2015 International Conference on Religion and Film in Istanbul*

Article 25

9-4-2017

Religious and National Identity in My Name is Khan (Hindi translation)

Kathleen M. Erndl
Florida State University, kerndl@fsu.edu

Recommended Citation
Erndl, Kathleen M. (2017) "Religious and National Identity in My Name is Khan (Hindi translation)," *Journal of Religion & Film*: Vol. 20 : Iss. 1 , Article 25.
Available at: https://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/25

This Article is brought to you for free and open access by DigitalCommons@UNO. It has been accepted for inclusion in Journal of Religion & Film by an authorized editor of DigitalCommons@UNO. For more information, please contact unodigitalcommons@unomaha.edu.

Religious and National Identity in My Name is Khan (Hindi translation)

Abstract

The Bollywood film, *My Name Is Khan* (2010) is the story of an Indian Muslim man, Rizwan Khan, with Asberger's Syndrome, living in the San Francisco area and married to an Indian Hindu woman, who, post 9/11, sets off on a journey across the United States to tell the President, "My name is Khan, and I'm not a terrorist." Filmed in lush settings in both India and the U.S., this high-budget production was a blockbuster both in India and abroad. For director Karan Johar, known for his highly successful glossy romantic dramas, such as *Kuch Kuch Hota Hai* (1998) and *Kabhi Khushi Kabbi Gam* (2001), it was a significant departure, both in terms of theme and cinematography. Six months before the release of *My Name Is Khan*, the star of the film, Shah Rukh Khan, while on a trip to the U.S., was detained by Homeland Security in the Newark airport and questioned for about two hours, because his name, Khan, had triggered a security alert. In Mumbai, demonstrators from the militant Hindu party, Shiv Sena, threatened the opening of the film. These two incidents, while external to the content of the film itself, relate directly to the intended audiences and to the message of the film. *My Name is Khan*, a love story set in pre and post-9/11 U.S., is an attempt to dispel stereotypes about Muslims for a Western, primarily North American, audience. Equally important is the message for the Indian audience of national unity, interreligious harmony and cooperation, in the wake of the Mumbai bombings of 26/11 (Nov. 26, 2008), while at the same time celebrating distinctive Muslim, as well as Hindu, religious identities. This paper explores ways in which Muslim images, practices, and beliefs—such as recitation of Bismillah, daily public prayer and wearing of prayer caps, *hijab* for women, giving of alms, the story of Abraham and Ishmael, and the pervasive Sufiana musical score—along with selected Hindu and American (especially African-American) motifs, are highlighted, reinterpreted, and re-contextualized. *My Name is Khan*, while navigating a minefield of problematic representations and cultural stereotypes, presents an identity that is at once both Muslim and Indian, while at the same time promoting a vision of universal humanity.

This has been translated into Hindi by Pritam Katoch.

Keywords

Bollywood, Terrorism, 911, Hinduism, Islam

Author Notes

Kathleen M. Erndl (1954-2017) was Associate Professor of Religion at the Florida State University. She conducted research and traveled in India frequently, receiving the prestigious Guggenheim Fellowship, Fulbright-Hays, and NEH Fellowship. She authored, Victory to the Mother: The Hindu Goddess of Northwest India in Myth, Ritual, and Symbol (Oxford, 1993), co-edited, Is the Goddess a Feminist? The Politics of South Asian Goddesses (NYU Press, 2000), and published articles on Sakta traditions, spirit possession, women's religious expressions, methodology, and gender issues in Hinduism.

This article is available in Journal of Religion & Film: https://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/25

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म

वॉल्यूम-20

इशू-1, दी 2015 इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिल्जियन एंड फिल्म इन इस्ताम्बुल आर्टिकल-5

1-4-2006

माय नेम इज़ खान में धार्मिक और राष्ट्रीय पहचान

कैथलीन एम एर्न्ड्ल

फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी, kerndl@fsu.edu

समर्थित दृष्टांत

एर्न्ड्ल कैथलीन एम (2016) "रिलिजियस्सएंड नेशनल आईडेंटटी इन माय नेम इज़ खान," जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20 इशू-1, दी 2015 इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिल्जियन एंड फिल्म इन इस्ताम्बुल आर्टिकल-5

Available at: http://digitalcommons.unomaha.

इडीयु/जेआरएफ/वॉल20/आईएसएस1/5

ये लेख डिजिटल कामनज़@यूएनओ द्वारा स्वतंत्र और खुली पहुँच के लिए यहाँ निशुल्क प्रस्तुत किया गया है ! डिजिटल कामनज़@यूएनओ के एक अधिकारिक प्रशासक द्वारा इसे धर्म और फिल्म पत्रिका में शामिल करने के लिए स्वीकार किया गया है ! अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें unodigitalcommons@unomaha.edu.

माय नेम इज़ खान में धार्मिक और राष्ट्रीय पहचान

सारांश

बालीवुड फिल्म “माय नेम इज़ खान(2010).” सन फ्रांसिस्को इलाके में रहने वाले एक भारतीय मुस्लमान रिज़वान खान की कहानी है जो मस्तिष्क सम्बन्धी एस्पर्गर संलक्षण या एस्पर्गरस संलक्षण (Asberger’s Syndrome), नामक बिमारी से ग्रस्त है, उसकी शादी भारत की एक हिन्दू लड़की से हुई है और जो 9/11 की घटना के बाद अमरीकी राष्ट्रपति को ये बताने के लिए घर से अमरीका की यात्रा पर निकल पड़ता है कि मेरा नाम खान है और मैं आतंकवादी नहीं हूँ ! भारत और अमरीका दोनों के आकर्षक स्थलों पर फिल्मांकित बड़े बजट वाली इस फिल्म ने भारत और विदेशों में बहुत बड़ी सफलता हासिल की ! तड़क-भड़क और नाटकीय प्रेम-प्रसंगो वाली *कुछ-कुछ होता है* (1998) और *कभी ख़ुशी कभी गम* (2001) जैसी अपनी जबरदस्त सफल फिल्मों के लिए जाने जाने वाले निर्देशक करण जोहर के लिए विषय और फिल्मांकन दोनों ही की दृष्टि से ये फिल्म एक बहुत बड़ा बदलाव था ! माय नेम इज़ खान फिल्म की रिलीज़ से छः महीने पहले अमरीका की यात्रा पर गए शाहरुखखान को न्यूयार्क हवाई अड्डे पर वहां के स्थानीय सुरक्षा बलों ने रोककर दो घंटे तक पूछताछ की क्यूंकि उसका नाम खान था जिससे सुरक्षा बल सतर्क हो गए ! मुंबई में हिन्दू पार्टी शिवसेना के प्रदर्शनकारियों ने फिल्म को रिलीज़ करने बारे धमकी दे दी ! ये दो घटनाएँ जो हालांकि अपने आप में फिल्म के विषय के बाहर हैं, मगर सीधे तौर पर भावी दर्शकों और फिल्म के सन्देश से अपना सम्बन्ध जोड़ती हैं ! अमरीका में 9/11 से पहले और बाद की पृष्ठभूमि में त्यार फिल्म “माय नेम इज़ खान” एक प्रेम कहानी है जो पश्चिमी, विशेष रूप से उत्तरी अमरीकी दर्शकों में मुस्लिमों बारे रूढ़िवादी सोच को दूर करने की एक कोशिश है ! जबकि साथ ही इसमें 26/11 के मुंबई बम धमाकों (26, नवम्बर 2008) के परिणाम स्वरूप, मुस्लिम और हिन्दू धर्म की विशेषता को बनाए रखते हुए, भारतीय दर्शकों के लिए राष्ट्रीय एकता, अंतरधार्मिक सद्भाव और सहयोग के सन्दर्भ से भी इसमें उतना ही महत्वपूर्ण सन्देश है ! इस लेख में मुस्लिमों की छवि, उनके आचरण, आस्था, जैसे कि बिस्मिल्लाह कहना, रोजाना की सार्वजानिक नमाज़, नमाज़ी टोपी पहनना, औरतों के लिए हिजाब, दान देना, अब्राहम और इश्माइल की कहानी और प्रचाल्लित सूफियाना संगीतमय कलाम साथ ही चुनिन्दा हिन्दू और अमरीकन (विशेष तौर पर अफ्रीकी-अमरीकी) मूल भावों को उजागर किया गया है, नए सिरे से व्याख्या की गयी है और नए सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है ! *माय नेम इस खान* फिल्म

समस्यापूर्ण प्रस्तुतियों और सांस्कृतिक रूढ़ियों के विस्फोटक घेरे में घूमती हुई एक ऐसी पहचान को सामने रखती है जो एक ही समय में मुस्लिम और भारतीय दोनों है जबकि इसके साथ ही सार्भौमिक मानवता के विचार को भी प्रोत्साहित करती है !

लेखक का विवरण/की टिपण्णी

कैथलीन एम एर्न्ड्ल, फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी में धर्म की एसोसिएट प्रोफेसर हैं जहां वो दक्षिणी एशिया के धर्मों से सम्बंधित विषय पढ़ाती हैं ! उनकी रूचि के शोध क्षेत्र हैं, हिन्दू देवी पूजा, हिन्दू महिलाओं के धार्मिक आचरण, हिन्दू-मुस्लिम परस्पर बात-चीत, लोकप्रिय भारतीय सिनेमा ! वो शाहरुखखान की प्रशंसक हैं ! ये लेख जौर्नल आफ रिलिजियन्‍न एंड फिल्म में उपलब्ध है !
http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/5

माय नेम इज़ खान (2010, करण जोहर द्वारा निर्देशित) बालीवुड फिल्म सन फ्रांसिस्को इलाके में रहने वाले एक भारतीय मुस्लमान रिज़वान खान (जिसका चरित्र शाहरुखखान ने निभाया) की कहानी है जो मस्तिष्क सम्बन्धी *एस्पर्गर संलक्षण या एस्पर्गरस संलक्षण (*Asberger's Syndrome), नामक बिमारी से ग्रस्त है, उसकी शादी भारत की एक हिन्दू लड़की, मंदिर राठौर (जिसका चरित्र काजोल ने निभाया), से हुई है और जो 9/11 की घटना के बाद अमरीकी राष्ट्रपति को ये बताने के लिए घर से अमरीका की यात्रा पर निकल पड़ता है कि मेरा नाम खान है और मैं आतंकवादी नहीं हूँ ! भारत और अमरीका दोनों के आकर्षक स्थलों पर फिल्मांकित बड़े बजट वाली इस फिल्म ने भारत और विदेशों में दोनों जगहों पर बहुत बड़ी सफलता हासिल की और उस समय विदेशी बाज़ार में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म थी ! तड़क-भड़क और नाटकीय प्रेम-प्रसंगो वाली *कुछ-कुछ होता है* (1998) और *कभी ख़ुशी कभी गम* (2001) जैसी अपनी जबरदस्त सफल फिल्मों के लिए जाने जाने वाले निर्देशक करण जोहर, जो कि एक हिन्दू हैं, के लिए, विषय के रूप में और धूम-धड़ाके वाले संगीत और गीतों और आइटम सांग की जगह सूफी प्रेरित गीतों की पृष्ठभूमि वाले पार्श्व संगीत दोनों ही रूप में "माय नेम इस खान" एक लीक से हटकर फिल्म थी ! एक मुस्लिम अभिनेता शाहरुखखान के लिए भी ये भूमिका पहले की भूमिकाओं से अलग थी ! अपनी बनाई दर्जनों फिल्मों में से (आईएमडीबी में सूचित 89 श्रेय)

उसने सिर्फ पिछली दो फिल्मों *"हे राम"* (2000,कमल हासन निर्देशित) और *"चक दे इंडिया"* (2007, शिमित अमिन निर्देशित) में ही मुस्लिम चरित्र निभाया है ! *माय नेम इज़ खान* की तरह इन दोनों फिल्मों में शाहरुख खान की तरफ से निभाई गयी भूमिका उसे प्रसिद्दी दिलाने वाली राज/राहुल जैसे रोमांटिक हीरो की भूमिकाओं से, बिलकुल हट कर है ! जोहर ने इंटरव्यू में खुद कहा है कि *माय नेम इज़ खान* का सन्देश बड़ा सरल है और उसे रिज़वान की मां के शब्दों व्यक्त किया जा सकता है "दो प्रकार के लोग होते हैं, अच्छे लोग और बुरे लोग, अच्छे लोग अच्छे काम करते हैं और बुरे लोग बुरे काम करते हैं" ! *माय नेम इज़ खान* के रिलीज़ होने से छह महीने पहले 14 अगस्त, 2009. शाहरुखखान, अपनी फिल्म के प्रचार और भारत के स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने के लिए जब अमरीका की यात्रा पर गए तो न्यूयार्क हवाई अड्डे पर स्थानीय सुरक्षा कर्मियों ने उन्हें दो घंटे रोककर इसलिए पूछताछ की क्यूंकि उसका नाम खान था और जिस वजह से सुरक्षा सतर्क हो गयी (शाहरुखखान को रोका गया....2009) !

एर्न्ड्ल: **"रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"**

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

इधर भारत में मुंबई में 12 फरवरी, 2010 को फिल्म के आरम्भ को लेकर अतिवादी शिवसेना के प्रदर्शनकारियों ने धमकी दे डाली, उन्होंने शाहरुख खान पर ये आरोप लगाय कि पाकिस्तानी क्रिकेट खिलाड़ियों के बारे में ब्यान देकर उसने विश्वासघात किया है (मर्पाक्वर एंड दुबे, 2010)! विडम्बना से ये दोनों घटनाएं, फिल्म के विषय को प्रतिबिम्बित करती है और भावी दर्शकों और संदेशों के साथ सीधा संपर्क स्थापित करती हैं ! प्यार और न्याय के लिए जिज्ञासा लिए *माय नेम इज़ खान* फिल्म अमरीका में 9/11 से पहले और बाद की पृष्ठभूमि में रची गयी एक प्रेम कहानी है जो पश्चिमी, विशेष रूप से उत्तरी अमरीकी दर्शकों में मुस्लिमों बारे रूढ़िवादी सोच को दूर करने की एक कोशिश है ! जबकि साथ ही इसमें 26/11 के मुंबई बम धमाकों (26, नवम्बर 2008) के परिणाम स्वरूप, मुस्लिम और हिन्दू धर्म की विशेषता को बनाए रखते हुए, भारतीय दर्शकों के लिए राष्ट्रीय एकता, अंतरधार्मिक सद्भाव और सहयोग के सन्दर्भ से भी इसमें उतना ही महत्वपूर्ण सन्देश है ! इस लेख में मेरा ये तर्क है की *माय नेम इस खान* फिल्म

समस्यापूर्ण प्रस्तुतियों और सांस्कृतिक रूढ़ियों के विस्फोटक घेरे में घूमती हुई एक ऐसी पहचान को सामने रखती है जो एक ही समय में मुस्लिम और भारतीय दोनों है जबकि इसके साथ ही सार्भौमिक मानवता के विचार को भी प्रोत्साहित करती है ! कागजों के पुलिंदे उस तरीके को सामने लायेंगे जिस तरीके से इस लेख में मुस्लिमों की छवि, उनके आचरण, आस्था, जैसे कि बिस्मिल्लाह कहना, रोजाना की सार्वजानिक नमाज़, नमाज़ी टोपी पहनना, औरतों के लिए हिजाब, दान देना, अब्राहम और इश्माइल की कहानी और प्रचाल्लित सूफियाना संगीतमय कलाम साथ ही चुनिन्दा हिन्दू और अमरीकन (विशेष तौर पर अफ्रीकी-अमरीकी) के मूल भावों को उजागर किया गया है, नए सिरे से व्याख्या की गयी है और नए सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है !

हिंदी सिनेमा में मुसल्मानों का चित्रण

हालांकि इतने बड़े फिल्म उद्योग में पिछली एक सदी से अधिक समय के दौरान मुसलामानों के चित्रण को लेकर कोई आम राय बना लेना मुश्किल है लेकिन मुस्लिम आधारित विषयों को समझने के लिए मैं पाठकों को हाल की ही संपादित पुस्तक *मुस्लिम कल्चर इन इंडियन सिनेमा* (जैन 2011), का हवाला ज़रूर दूंगा ! हाँ ये दावे से कहा जा सकता है कि कुछ अपवादों को छोड़कर मुसलमानों को भारतीय फिल्मों में खलनायक के रूप में पेश नहीं किया जाता है जैसा कि पश्चिमी और विशेष रूप से अमरीकी सिनेमा में होता है ! व्यापक रूप से ये भारतीय सेंसर बोर्ड के कारण है जो उन विषयों पर रोक लगता है जिस से धर्म और जाति का अपमान होता हो और इसके साथ ही भारतीय फिल्म निर्माताओं में मौजूद आम रुझान जो एक बहुलवादी और एकीकृत समाज के भारतीय राष्ट्रीयवादी आदर्श को बढ़ावा देता है ! पिछले कुछ समय तक आम तौर पर दो तरह के चित्रण थे ! पहला वो जो इस्लामिक एतिहासिक फिल्मों में दिखाई देता था और यां फिर वो आधुनिक पारिवारिक नाटकों, जिन्हें “मुस्लिम सामाजिक”, कहा जाता है और जो भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों के घरेलु जीवन को दर्शाते हैं ! (ड्व्येर, 2006:97-131). दूसरा अधिकतर मुख्यधारा की लोकप्रिय फिल्मों में होता था जहाँ हिदुत्व की पहचान बनाए रखते हुए अधिकतर चरित्र भी हिन्दू ही होते थे ! हिन्दू यां फिर धर्मनिरपेक्षता के अधिकतर विषयों वाली इन फिल्मों में भारतीय समाज में सहनशीलता और बहुलवाद को प्रदर्शित

करने के लिए मुस्लिम चरित्र आम तौर पर जगह भरने के लिए रखे गए होते ! क़व्वाल (सूफ़ी गायक), तवायफ़ (वेश्या), लकड़ी का व्यापारी, एक विशेष प्रकार का चाचा यां दोस्त, ऐसी फिल्मों में व्यापक सतह पर पेश किये जाते थे ! (जैन, 2011; ड्व्येर 2006: 132-161)

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

हिन्दू केन्द्रित समाज में मुस्लिमों को एक अतिरिक्त चरित्र के तौर पर और उनके रूडिवादी स्वरूप को बढ़ावा देना सामन्यता भारतीय सिनेमा का स्वभाव बताने वाले कल्याणी चढा और आनंदम कावूरी जैसे विद्वानों के विपरीत तर्क देते हुए, और पिछले सात दशकों में हिन्दू-मुस्लिम विषयों पर बनी फिल्मों के एक सर्वेक्षण के माध्यम से किसी हद्द तक विनय लाल (2008), पंकज जैन का अनुसरण करते हुए ये निष्कर्ष निकलता है कि "अपने पूरे इतिहास में भारतीय फिल्मे गांधी की सामाजिक सद्भावना और नेहरु के राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षता पर आधारित रही हैं " (2011: 357). विभाजन का विषय, 1947 में ब्रिटिश उपनिवेशवाद समाप्त होने के बाद धर्म के आधार पर भारत और पाकिस्तान के रूप में मुल्क का बटवारा होना, इसके साथ ही विस्थापन और उससे हुई तबाही, स्पष्ट यां अस्पष्ट रूप से बहुत सारी भारतीय फिल्मों की पृष्ठभूमि रही है ! भास्कर सरकार ने अपने अध्ययन *मौर्निंग दा नेशन: इंडियन सिनेमा इन दी वेक ऑफ़ पार्टीशन* में अर्थपूर्ण तरीके से तर्क दिया है कि स्वतंत्रता के बाद के पहले दशक में बंटवारे के बारे में स्तब्ध करने वाली निशब्धता एक प्रकार से विलाप है, जबकि 1980 के बाद से बंटवारे से सम्बन्धित सामने आई कहानियों, भारत के राष्ट्र के रूप में हासिल उपलब्धियों से हुए मोह-भंग को दर्शाती हैं ! भारतीय घरेलु मंच पर, हिन्दू-मुस्लिम दंगों सम्बंधित विषयों पर आधारित फिल्मे, विशेष कर वो, जो बाबरी मस्जिद, जिसे हिन्दू राष्ट्रवादी राम की जन्म भूमि होने का दावा करते हैं, के गिराए जाने (6 दिसम्बर, 1992), के बाद से सामने आई हैं !

उदहारण के रूप में इस तरह की एक फिल्म है *बॉम्बे* (मणि रत्नम द्वारा निर्देशित, 1995), जो 1992-93 के मुंबई दंगों की पृष्ठभूमि में एक तमिल हिन्दू-मुस्लिम परिवार और पति-पत्नी के व्यथा को दर्शाती है ! अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय आतंकवाद की प्रतिक्रिया में पिछले 15 वर्ष के दौरान हिन्दू-मुस्लिम विषयों वाली दो अलग तरह की फिल्मे सामने आई हैं ! पहली किस्म की फिल्मों में इस्लामिक आतंकवाद को दर्शाया गया है जैसे कि अमरीका में फिल्मांकित, *कुर्बान* (2009, रेंसिल डी-सिल्वा द्वारा निर्देशित) और *न्यू यार्क* (कबीर खान द्वारा निर्देशित, 2009), और भारत में फिल्मांकित *फना* (कुनाल कोहली निर्देशित, 2006) ! दूसरी तरह की फिल्मों में धर्म और अन्य रुकावटों पर विजय प्राप्त करने को बढ़ावा दिया गया है जिनमे शामिल हैं (2007 की शिमित अमीन निर्देशित) *चक दे इंडिया* और (2004 की यश चोपड़ा निर्देशित) *वीर-ज़ारा* ! *माय नेम इज़ खान* इन दोनों धाराओं को आपस जोड़ती है और दूसरी फिल्मों सहित लोकप्रिय संस्कृति में मुसलामानों के प्रतिनिधित्व बारे भारत में जनसंवाद पैदा करती है ! 11, एनडीटीवी पर एक विशेष कार्यक्रम में (वी द प्युपल: बींग मुस्लिम इन टू) शाहरुखखान, करन जोहर और दूसरे फिल्म निर्माताओं और बुद्दिजीवियों ने इस विषय पर बात की ! हालांकि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि करण जोहर ने कभी मानव विज्ञानी (ऐन्थ्रपॉलजिस्ट) विक्टर टर्नर को पढ़ा है यां नहीं मगर रिज़वान खान का चरित्र और उसकी अमरीका यात्रा, वास्तव में टर्नर की लिमिनालिटी यानी दोराहे पर खड़े जीवन बारे धारणा सम्बन्धी किताब के उदहारण हैं (टर्नर, 1969, 1974)! लीमेन, जिसका अर्थ दहलीज है, से लिए गए लिमिनालिटी अर्थात दहलीज शब्द का प्रयोग टर्नर ने पहले, सांसारिक अनुष्ठानों यां पारगमन प्रक्रिया की मध्य अवस्था का हवाला देने के किया, जैसा अर्नाल्ड वैन गेन्नेप ने वर्णन किया है जिसमे दीक्षित को समाज से हटाया जाता है, प्रतिष्ठा समाप्त की जाती है, और विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं से गुज़ारा जाया है जिसके बाद वो समाज में बदले और एकीकृत रूप में नई प्रतिष्ठा के साथ उभरते हैं ! बाद में टर्नर ने इस धारण को विस्तृत करते हुए सभी प्रकार के अनुष्ठानों में संस्कार करने वाले की विशेषताओं और व्यापक रूप से विशेष प्रकार के लोगों (उदाहरण के रूप में चालबाज़ और सन्यासी) और सामाजिक प्रक्रियाओं (रंगमंच, उत्सव, तीर्थ यात्रा) जो

सामाजिक ढाँचे में प्रतिभार के लिए ढांचा विरोधी उमंग को मूर्तरूप देते हैं पर लागू किया !

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

रिजवान, कई तरीकों से अपने आप में एक दहलीज पर खड़ा चरित्र है ! पहला, वो *एस्पर्गर संलक्षण या एस्पर्गरस संलक्षण* से प्रभावित है, स्वयं में लीन रहने वाली एक दिमागी स्थिति ! उसकी मनोव्यथा यां विशेष प्रतिभा, इस बात पर निर्भर करती है कि कोई उसे किस रूप में लेता है, दूसरी तरह से कहानी में कुछ असंभव कथानक बिन्दुओं को संभव बना देते हैं ! सबसे अधिक ध्यान योग्य बात ये है कि वो अपनी पत्नी की बात को उस समय पूर्ण रूप से लेता है जब वो संताप से उसे कहती है कि राष्ट्रपति को बताना कि उसका नाम खान है और वो आतंकवादी नहीं है ! पीले रंग के प्रति उसकी विमुखता, छू जाने पर, और चुटकलों और संकेतों को ना समझ पाने की अपनी अयोग्यता के कारण अपने आप को अपरिचित स्थितियों में पाने, चीखना और अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करना, और झूठ बोलना और इसके साथ-साथ अपने नित्य-कर्म के पालन प्रति कट्टरता, अपने सम्बन्धों को कठिन बनाना, कारण पैदा करने कि दूसरे उसे अलग समझें यां फिर बेशक उस से किनारा कर लें ! उसका *एस्पर्गर संलक्षण* स्पष्ट कर देता है कि वो सेल-फोन क्यूँ नहीं रखता है, उसे इस बात पर पूरा विश्वास है कि विकिरण से मधुमखियों की मौत हो जाती है और जिसका परिणाम अंततः मनुष्य जाति का विनाश होगा !

एन्ड्ल: "रिलिजियन्स एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

हालांकि उसकी तंत्रिका सम्बन्धी रचना, दूसरों से उसके पारस्पारिक व्यवहार को सीमित करती है, लेकिन साथ ही ये उसे जादुई शक्तियां, अद्भुत स्मरण शक्ति और लगभग हर चीज़ संवारने की योग्यता भी प्रदान करती है ! दूसरे, रिजवान भारत के अल्पसंख्यक मुस्लिम वर्ग का सदस्य है, एक अवस्था जो द्वार पर है

यां कई बार प्रभावहीन है विशेष तौर पर दंगों और संकट की स्थिति में ! निश्चित रूप से मुस्लिम अपने समुदाए के भीतर प्रभावहीन नहीं हैं, जो भारतीय जनसँख्या का 13 प्रतिशत हैं, और भारतीय इतिहास के अधिकतर भाग ने हिन्दू और मुसलामानों के बीच संबंधों के सहयोग और सद्भावना को देखा है ! मगर बंटवारे के बाद से अत्याधिक राजनितिक वातावरण में भारत में रहने वाले बहुत से मुस्लमान टर्नर की भाषा में "दुविधा और बीच की" स्थिति में हैं और कम-से-कम कुछ हिन्दुओं द्वारा उन्हें पाकिस्तान के प्रति निष्ठा रखने वालों के रूप में देखा जाता है ! इस बात से आहत हुए शाहरुख खान "बालीवुड का बादशाह" के तौर पर स्वयं, भारत के प्रति अपनी देश भक्ति पर (विश्वनाथन, 2011) बल देना पड़ा और मुस्लिम होने पर गर्व को अपनी धर्मनिरपेक्षता से संतुलित करना पड़ा (खान, 2013) !

अंततः, अमरीका आने के बाद रिज़वान अपने आंतरिक स्वभाव से और अधिक बाहर आ जाता है ! सबसे पहले एक अनजान धरती पर उसकी भिन्नता एक विदेशी, एक भारतीय होने पर और अधिक केन्द्रित हो जाती है ! अमरीका में अप्रवासी होने के नाते जीवन जीने के लिए अपने प्रयत्न और कष्ट, मंदिरा के साथ सांझा करने पर वो उसके साथ जुड़ जाता है, अपने इन अनुभवों को बेसुरे दोगाने "हम होंगे कामयाब" ("वी शैल ओवरकम", बाद में इस गाने के बारे में और भी बात करेंगे), के रूप में उजागर करते हैं ! शादी के बाद उसे अपने जीवन में परिवार वालों, दोस्तों संग और काम पर थोड़ी-बहुत सामान्यता और प्रसन्नता प्राप्त होती है ! 9/11 के बाद उसकी ज़िन्दगी बिखर जाने से वो फिर से अत्याधिक भिन्नता वाली स्थिति में धकेल दिया जाता है ! उसकी पत्नी का व्यापार नष्ट हो जाता है, उसके सौतेले बेटे को स्कूल में ताने मारे जाते हैं और सबसे अच्छे दोस्त छूट जाते हैं और फिर अंत में एक त्रास्दी उसे देश की यात्रा पर जाने के लिए विवश कर देती है ! अमरीका में 9/11 के बाद, इस्लाम के बारे में जो रुड़ीवादी सोच है, मुस्लिमों और उनकी तरह दिखाई देने वालों जैसी सिक्खों के प्रति भड़के घृणात्मक अपराध सर्व विधित हैं ! इन में से अनेक को फिल्म में दर्शाया गया है, जैसे कि एक स्कूल में एक अध्यापिका ये पढ़ा रही है कि "इस्लाम सब धर्में में से अधिक हिंसात्मक है !" इस से बहुत पहले के दौर में पलकर बढ़े हुए, जब इस्लाम नहीं बल्कि साम्यवाद को "अमरीकी जीवन शैली" के सबसे बड़े दुश्मन के रूप में देखा जाता था में, मुझे नहीं यद् कि कभी स्कूल में इस्लाम के

बारे में कुछ पढ़ाया जाता था, और मुझे विचार आया कि ये चित्रण अतिश्योक्ति है ! तो भी मेरे विध्यार्थियों, जिन्होंने ये फिल्म देखी और जो 9/11 के बाद मिडल स्कूल में थे, ने कहा कि वास्तव में ये अतिश्योक्ति नहीं थी ! दो ने तो ये बताया कि एक अध्यापक ने क्लास में एक मुस्लिम बच्चे को परेशान किया और उसे आतंकवादी होने का ताना मारा ! विद्द्यार्थी का नाम खान था ! पश्चिमवासियों, विशेष रूप से अमरीकियों में मुसलमानों और सभी इस्लामिक चीज़ों (गोत्त्स्चाल्क एंड ग्रीन्बुर्ग, 2007; ग्रीन, 2015) के बारे गहराई तक समाये डर और घृणा की अभिव्यक्ति के लिए "इस्लामोफोबिया" शब्दावली को, पिछले कुछ वर्षों में, विशेष तौर पर 9/11 के बाद, मीडिया में और यहाँ तक कि अध्ययन साहित्य में भी प्रमुखता दी गयी है, और मुस्लिम पुरूषों को, विशेष तौर पर हिंसा से जुड़े हुए और मुस्लिम महिलाओं को दमन से पीड़ित अंकित किया गया है ! *माय नेम इस खान* "इस्लामोफोबिया" बारे विशेष रूप से भारत की एक प्रतिक्रिया थी ! रिज़वान की यात्रा ना केवल अपने लिए अपितु मुसलमानों, भारतीयों और पूर्णरूप से मानवता के लिए न्याय प्राप्त करने और, ऋणमुक्ति के लिए की गयी एक तीर्थ यात्रा थी एक पवित्र यात्रा थी ! पूर्वानुमान अनुसार फिल्म का आरंभ 2008 की वसंत में एक हवाई अड्डे से होता है जहां राष्ट्रपति से भेंट करने के लिए रिजवान, वाशिंगटन डी०सी० जाने वाले हवाई जहाज़ पर सवार होने ही वाला है !

जौर्नल आफ रिलिजियन्न एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

फिल्म के अधिकतर भाग में रिज़वान की तरफ से अपनी डायरी में मंदिरा के नाम लिक्खे गए सन्देश पृष्ठभूमि में उसकी आवाज़ के संग उसके बचपन से लेकर अपनी यात्रा शुरू करने तक की घटनाओं के पूर्वदृश्य बीच-बीच में श्रृंखला बद्द तरीके से प्रस्तुत किये गए हैं ! मगर उसकी यात्रा योजना अनुसार नहीं चल पाई ! हवाई जहाज़ की उड़ान से पहले स्थानीय सुरक्षा बालों द्वारा उसे इतनी देर तक रोक कर रक्खा जाता है उसकी उड़ान छूट जाती है ! उसकी टिकेट पैसे वापिस लौटा सकने योग्य नहीं है और दूसरी टिकेट खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं ! ये उसके मार्ग की पहली रुकावट थी, वो भ्रान्तिजनक राष्ट्रपति की खोज में, जिसके बारे में हर बार लगता है कि उसने खो दिया, बसों में सवार होता है, दूसरों

के वाहन पर अनुरोध कर यात्रा करता है, रस्ते में गाड़ियों की मुरम्मत कर, यहाँ तक कि हर तरह के काम कर पैसे कमाता है ! एक जगह आ कर वो एक मोटल में रुकता है जिसका मालिक एक ठेठ गुजराती है, वो उसे हिंदी बोलते देख पहले तो उसका स्वागत करता है ! मोटल का मालिक रिज़वान को हिन्दू समझता है लेकिन उसके मुस्लिम को आतंकवादी बताकर अपमानजनक बातें कहने पर रिजवान को कहना पड़ता है कि मेरा नाम खान है और मैं आतंकवादी नहीं हूँ !

रास्ते में वो जार्जिया के अफ़्रीकी-अमरीकी ग्रामीण समुदाय के पास रुकता है जहां उसकी दोस्ती ममा जेनी और उसके बेटे के साथ हो जाती है जिसे वो “फन्नी-हेयर जोएल” कहता है ! वो एक चर्च में होने वाले समारोह में उनके साथ शामिल होता है जहां युद्द के शहीदों जिनमे ममा जेनी का बेटा सैम भी शामिल है, को याद किया जा रहा है और ये समारोह इस “वी शैल ओवरकम” समूहगान के साथ समाप्त होता है ! कुछ आलोचकों को फिल्म का ये दृश्य असंगत लगा लेकिन ये भारतीय मुस्लिमों को अफ़्रीकी-अमरीकियों के साथ जोड़ कर फिल्म के मूल विषय को आगे ले जाता है और इस पर मैनें आगे चर्चा की है ! रिजवान आखिरकार लॉस एंजेल्स के एक कालेज में भाषण दे रहे राष्ट्रपति बुश की एक झलक पा ही लेता है ! लेकिन उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है, नज़रबंद कर दिया जाता है और एफबीआई उससे पूछताछ शुरू कर देती है ! इसी दौरान उसे एक भारतीय हिन्दू प्रसारण विद्यार्थी और एक भारतीय सिक्ख टीवी पत्रकार, जिसने 9/11 के हमलों के बाद उसे मुस्लिम समझे जाने से बचने के लिए पगड़ी बांधना बंद कर दी थी और दाड़ी भी साफ़ करवा ली थी, की तरफ से उसे गिरफ्तार किये जाने का समाचार मीडिया के माध्यम से सामने लाये जाने पर ये मामला जन चर्चा का विषय बन जाता है ! अंत में अमरीकी औटिस्टिक सोसाईटी एक जज के साथ संपर्क करती है जो रिजवान की रिहाई के हुक्म जारी करता है ! उसे लेने आई मंदिरा पर एक नज़र डालता है मगर उसके पास नहीं जाता और ना ही घर वापिस

जाता है क्यूंकि एक कल्पना का रूप ले चुकी राष्ट्रपति से मिलने की उसकी यात्रा, अभी अधूरी है !

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

उपासना: पूजा और नमाज़

जब मंदिरा और रिजवान शादी का फैसला करते हैं तो उसका भाई, जाकिर, जिसकी रिजवान के लिए हमेशां से विद्वेष और अपराध बोध वाली मिश्रित भावना बनी रही है, ये कहकर उसे अपनाने के लिए इनकार कर देता है कि “वो हिन्दू है वो हमसे अलग है !” वो थोड़े से भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ, जैसे नाच-गाना और वेश-भूषा, जो बाहरी तौर पर ना ही हिन्दू हैं और ना ही मुस्लिम हैं, के साथ एक नागरिक समारोह में शादी करते हैं ! (जाकिर की पत्नी, हसीना, शादी में शामिल नहीं होती ! इस बारे में और अधिक आगे !) शादी के बाद, रिजवान और मंदिरा सुखदाई और आपसी सहयोग वाली दिनचर्या में डूब जाते हैं ! वो एक नए घर में रहने लगते हैं ! मंदिरा अपना एक ब्यूटी सैलून खोल, उसका नाम मंदिरा खान रखती है जो मुस्लिम पति वाली उसकी मिश्रित हिन्दू पहचान को दर्शाती है ! वो सैलून का उदघाटन, रिब्बन काटने वाली (पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता), और भारतीय मंदिर आचरण की नारियल तोड़ने वाली परम्परा वाले समारोह के साथ करते हैं जो की आमतौर पर बालीवुड फिल्म निर्माण के आरम्भ में भी किया जाता है ! मंदिरा के बेटा समीर, जो रिजवान का सौतेला बेटा है, दोनों विडियो गेम के माध्यम से एक-दूसरे के निकट आते हैं ! वो केवल एक परिवार ही नहीं बन जाते बल्कि इस बात का आदर्श भी बन जाते हैं की एक मानवतावादी समाज कैसा हो सकता है ! ये सन्देश सुबह से शुरू होने वाले उनके अपने-अपने धार्मिक आचरण सम्बंधित छोटे-छोटे श्रृंखलाबद्द दृश्यों के माध्यम से दिया जाता है ! रिज़वान, नमाज़ी टोपी पहने अपने कमरे में सुबह की नमाज़ अदा करता है जो मुसलामनों की रोजाना पड़ी जाने वाली पांच नमाज़ों में से एक है, मंदिरा, अपने हाथों में फूल और खाने की चीज़ों वाली पूजा की थाली, जिसमे तेल से प्रजवाल्लित दीपक भी है, लिए हिन्दू देवता की प्रतिमा के सामने पूजा-अर्चना करती है और देवता के सन्मुख उस थाली को घुमाती है जिसे आरती कहते हैं !

वो नखरे दिखाने वाले अपने बेटे को चिढ़ाते हुए भगवान् के आशीर्वाद वाली मिठाई का टुकड़ा उसके मुहं में डालती है ! ये सभी दृश्य संगठित प्रकार से, बहुत कम संवादों संग, एक लम्बी श्रृंखला के रूप में, दोनों की शादी से शुरू होकर समीर को स्कूल छोड़े जाने वाली एक विशिष्ट सुबह पर समाप्त होते हैं ! इन दृश्यों की पृष्ठभूमि में *सजदा* शीर्षक वाला गीत चलता रहता है, जो एक अरबी शब्द है और रोज़ की मुस्लिम नमाज़ के लिए मक्का की तरफ सर झुकाने के सन्दर्भ में जिसका इस्तेमाल उर्दू और हिंदी दोनों में किया जाता है, लेकिन व्यापक रूप में इसका प्रयोग किसी के आगे झुकने और किसी के लिए यां किसी चीज़ के लिए अपने आप को समर्पित करने के लिए किया जाता है !

एर्न्ड्ल: **"रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"**

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

प्रेम-प्रसंग और सूफी काव्य, जिनमे भेद कर पाना कठिन है, में *सजदा* का अर्थ अपने प्रिय, देव हो अथवा मानव, के प्रति पूर्ण रूप से समर्पण करना है ! अन्य गीतों संग इस्लामी आध्यात्मवाद की प्रतिध्वनी वाला *सजदा* गीत फिल्म में मुस्लिम धार्मिक प्रतीकों और भाषा को व्यापक रूप से उजागर करता है और सुदृढ बनाता है ! लगभग हर दृश्य में रिज़वान को मुस्लिम प्रदर्शित किया गया है, चाहे नमाज़ी टोपी पहने, चाहे *बिमिल्लाह* कहते हुए, यां नमाज़ अदा करते हुए ! मंदिरा हिन्दू है, ये पक्की बात है लेकिन उसका हिंदुत्व व्याप्त रूप में अगोचर रह जाता है ! भारतीय दर्शक उसके नाम "मंदिरा" से ही तुरंत जान जाते हैं कि वो हिन्दू है ! पश्चिमी देशों के दर्शक तब तक ये बात नहीं जान पाते जब तक जाकिर चिल्लाकर ये नहीं कहता " वो (हिन्दू), हमसे अलग हैं !" ये भेद भी खोला गया है कि उसके पूर्व पति का उपनाम राठौर था, जिसका सम्बन्ध राजस्थान के हिन्दू राजपूत (राज घराने) जाति से है, लेकिन ये कहीं नहीं बताया गया है की कुंवारी मंदिरा का नाम क्या था हालांकि हर कोई इस बात का अनुमान लगा लेगा कि व्यवस्था विवाह के कारण वो भी उसी जाति की ही होगी ! ये बात उजागर करने के बजाये अप्रत्यक्ष रक्खी गयी है ! मंदिरा और रिजवान, दोनों भारतीय होने के नाते पहली भेंट के तुरंत बाद एक दूसरे संग हिंदी में बात करते हुए बतियाने लगते हैं ! रिजवान लगभग हर दृश्य में मुस्लिम दिखाई देता है जबकि बहुत कम जगहों पर मंदिरा को हिन्दू प्रतीक प्रयोग करते यां हिन्दू आचरण का पालन करते दिखाया गया है ! सुबह की पूजा के दृश्य और जब वो नए घर में आते हैं तो अपने एक दोस्त के माथे पर तिलक लगाने वाले छोटे से दृश्य को छोड़ कर फिल्म में प्रकट रूप में हिन्दू आचरण सम्बन्धी एक ही दृश्य है जो हालंकि तुरंत निकल जाता है ! फूटबाल मैच के दौरान नस्लीय हिंसा से प्रेरित हमले में आई आन्तरिक चोटों के कारण से जब हस्पताल में समीर की मृत्यु हो जाती है तो उस से अगले दृश्य में मंदिरा, जिस कमरे में समीर के पार्थिव शरीर से लिपट कर रोती है, जो संभवता उसका बेडरूम है ! वहां से कैमरा धरती पर रक्खे समीर के

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*

http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

गद्दे को दिखाता है जो हिन्दू परमपरा अनुसार मृत अथवा मरणकालीन व्यक्ति के शरीर को धरती पर रक्खे जाने से सम्बंधित है ! लेकिन कमरा में घना अँधेरा है और दृश्य इतना क्षणिक है कि जब तक कोई बड़े ध्यान से ना देखे, इसके ना दिखाई देने की पूरी संभावना है विशेष तौर पर उनके लिए जो भारतीय नहीं हैं ! जबकि रिजवान, समीर की मौत की खबर सुनकर पारम्पारिक इस्लामी नमाज़ अदा करता है (*इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलाय्ही रजेऔन*), लेकिन मंदिरा को किसी तरह की हिन्दू प्रार्थना करते यां हिन्दू परंपरा अनुसार उसका अंतिम संस्कार करते नहीं दिखाया गया है ! न ही उसके थोड़े-बहुत हिन्दू आचरण की किसी तरीके से व्याख्या की गयी है और ना ही कोई टिपण्णी की गयी है ! दूसरी तरफ रिजवान की मुस्लिम धार्मिक प्रथाओं को प्रमुक्खता देते हुए उजागर किया गया है ! अनेक दृश्यों में उसे झुकते और नमाज़ अदा करते दिखाया गया है ! 9/11 के पीड़ित व्यक्तियों के लिए आयोजित एक स्मारक सेवा में वो अरबी भाषा में प्रार्थना करता है, जबकि उसे देख रहे लोग एक सशंकित प्रतिक्रिया देते हैं और राहत कोष के लिए दिए गए उसके दान को ज़कात बताते हैं जो इस्लाम के पांच स्तम्भों में से एक है जिसमे दान देना आवश्यक बताया गया है ! एक दृश्य में बड़ी प्रमुक्खता से दिखाया गया है कि अमरीका में रहने वाले कुछ मुसलमान इस डर से सार्वजनिक तौर पर प्रार्थना करने में अनिच्छा जताते हैं कि कहीं वो लोगों की नफरत यां आक्रामक्ता का निशाना ना बन जाएँ ! बस में सफ़र करते हुए रिज़वान की मित्रता एक मुस्लिम दम्पति से हो जाती है ! लोग जानते हैं कि ये मुस्लिम हैं क्यूंकि पत्नी ने हिजाब पहना है, सर ढका हुआ है, और वो आपस में उर्दू में बात कर रहे हैं, इसलिए दक्षिण एशिया के भारत यां पाकिस्तान से हैं ! इस दौरान जब वो एक अल्प विराम कैफे में होते हैं तो रिज़वान अपनी घड़ी में समय देखने के बाद, अपनी नमाज़ी टोपी पहनकर, ये कहते हुए उठने लगता है कि नमाज़ का समय हो गया ! वो पति-पत्नी दोनों घबराए हुए एक-दूसरे को देखते हैं और पति झिझकते हुए कहता है “नमाज़ लोगों को और जगह को देख कर अदा की जानी चाहिए !” रिजवान उत्तर देता है “नहीं, नमाज़, नियत के अनुसार अदा की जानी चाहिए !” वो

वाहन खड़े करने वाले स्थान पर झुकता है, एक और आदमी आकर उसके साथ हो जाता है, जबकि बस के पास खड़े यात्री उन्हें घूरते हैं यां तस्वीर उतारते हैं !

एन्ड्ल: **"रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"**

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

यहाँ रिज़वान का रोग *एस्पर्गर*, एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, कभी झूठ ना बोलने की उसकी सख्त नित्यचर्या के साथ ही लोगों के मज़ाक तथा व्यंग्य को समझ पाने की अयोग्यता कारण वो निसंकोच भाव और बिना किसी घबराहट के अपनी धार्मिकता प्रदर्शित कर पाता है जबकि कि दूसरे ऐसे लोग जो किसी भी प्रकार के मानसिक रोग से प्रभावित नहीं हैं ऐसा करने में संभवता संकोच करें ! इस दृश्य में और इसके बाद तथा पहले और जोशुआ ट्री स्टेट पार्क के रेगिस्तानी भूदृश्य के पार्शव में चल रहे गीत, नूरे खुदा (खुदा की रौशनी) है ! एक और दृश्य में रिज़वान को, ये देख कर की कुछ मुसलमान, धार्मिक आधार पर हिंसा को न्यायिक ठहरा रहे हैं, के साथ इस्लाम की सही व्याख्या को लेकर तकरार करते दिखाया गया है जहां वो जोर देकर ऐसी न्यायासंगिता की वैधता को नकारता है ! मुल्क की विभिन्न जगहों पर घूमने के बाद रिजवान लॉस एंजेल्स पहुँचता है जहां राष्ट्रपति जॉर्ज डव्ल्यू बुश भाषण देने वाले हैं ! वो एक मस्जिद में शरण लेता है जहाँ वो एक राजनीतिक नेता डाक्टर फैज़ल को एक अजनबी की मांग पर इश्माइल की तरफ से खुदा को अपने बेटे की कुर्बानी देने वाली वाली कहानी सुनाकर, हिंसात्मक भावना से अपने अनुयाइयों को भड़काते हुए सुन लेता है ! रिज़वान ये कहकर टोक देता है कि रहमान गलत है , जैसा कि उसकी मां ने उसे बताय कहानी का असली नुक्ता ये है कि खुदा दयालु है ! रहमान के साथियों में से एक रिजवान को पूछता है कि अब्राहीम से बात करने वाल अजनबी कौन था ? रिज़वान उत्तर देता है “शैतान”, अपनी जेब में रखे कंकरों (कष्टदाई मनकों की तरह) को निकालता है और रहमान की ओर फेंक देता है ! ये कारवाई शैतान को पत्थर मारने वाली मक्का की इस्लामी यात्रा हज की उस प्रक्रिया की प्रदर्शित करती है जो ज़रूरी है और ये रिज़वान की पवित्र यात्रा की एक और मिसाल है !

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

हसीना, हिजाब, और मुस्लिम महिलाओं का प्रितिनिधित्व !

दो महिला चरित्र, एक रिज़वान की मां राज़ी और उसकी भाभी हसीना का रिज़वान पर बड़ा गहरा प्रभाव है जो उसे अपने *एस्पर्गर* से निपटने और अपनी विशेष प्रतिभा को विकसित करने में सहायता देते हैं ! वो फिल्म की कलात्मकता में सहयोग देते हुए मुस्लिम महिलाओं बारे पशचिम की मौजूदा रूडिवादी सोच को नकारती हैं ! रिजवान की मां उस वक़्त विधवा हो गयीं थीं जब उनके दो छोटे-छोटे बच्चे थे, एक रिज़वान और दूसरा छोटा सा उसका भाई, जाकिर, जिसकी उसने पारम्परिक कढ़ाई (जरी) का काम करके सहायता की ! कढ़ाई के शिकंजे पर कसे एक पारभासी कपडे के पीछे से सुई निकालने वाला उसका एक दृश्य पालन-पोषण के दौरान रिजवान को उसकी तरफ से दी जानी वाली नैतिक शिक्षा की शानदार तस्वीर पेश करता है ! हालांकि वो अनपढ़ है, और मुंबई में बड़े होने के कारण रिज़वान की स्थिति का पूरी तरह से निदान नहीं हो पाया था, फिर भी वो इस बात समझ चुकी थी कि उसे विशेष ध्यान की आवश्यकता है और वो उसे असीमित स्नेह करती है ! जब स्कूल में बच्चे उसे चिढाने लगे तो उसने एक सेवा निवृत पारसी (ज़ारोऐस्ट्रीअन) स्कूल अध्यापक की मिन्नत कर उसे निजी रूप में पढाने के लिए कहा, वो पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करता है ! वाडिया साहिब के घर में ही उसने आँगन में बाढ़ से इकट्ठे हुए पानी को बाहर निकालने के लिए साइकिल पम्प विकसित किया और ये पाया कि वो तकरीबन हर चीज़ की मुरम्मत कर सकता है और यही शब्द (रिपेयर आलमोस्ट एनीथिंग) अमरीका में उसे घूमते हुए एक बोर्ड पर दिखाई देते हैं ! वो इतनी उदारता से रिजवान पर ध्यान देती है और उसकी उपलब्धि पर इतना अधिक गर्व प्रदर्शित करती है कि उसका छोटा भाई जाकिर, जो खुद भी एक तेजस्वी और निपुण है, उपेक्षा और अप्रसन्नता अनुभव करता है !

1983 के हिन्दू-मुस्लिम दंगों में (1992-93 के दंगों की तरह चर्चित नहीं लेकिन फिल्म की समय सीमा के लिए आवश्यक !), जब वो हिंदुओं के विरुद्द अस्पष्ट आवाज़ में तोते की तरह आरोप लगाता हुआ घर आता है, जो उसने गली में सुने

एर्न्ड्ल: "रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

थे, तो उसकी मां ने उसे नीचे बिठाकर दो आकृतियाँ खींचीं, एक छड़ी से डराने वाली और दूसरी लालीपाप भेंट करने वाली ! उसे इन दोनों में से हिन्दू और मुस्लिम की पहचान करने को कहते हुए उसने कहा " केवल दो प्रकार के लोग होते हैं, अच्छे लोग और बुरे लोग ! अच्छे लोग अच्छे काम करते हैं और बुरे लोग बुरा काम करते हैं !" वो उसे बताती है कि वो उसे जीवन में खुश देखना चाहती है, और वो मां की इस कामना को पूरा करने के लिए पूरी फिल्म में संघर्ष करता है ! रज़िया हालाँकि बालीवुड फिल्मों में प्रचल्लित आदर्श मां का ही मूर्तरूप है, लेकिन इसके साथ ही वो अपनी दृढ़ता और हठ से रुड़ीवादी सार्वभौमिक नैतिक नियमों का विरोध करती है ! अपनी मां की मौत के बाद जब रिजवान अमरीका चला जाता है तब उसकी मुलाकात अपने भाई की पत्नी हसीना से होती है जो अमरीका में उसके जीवन को स्थाई बनाने में महत्वपूर्ण साधक बनती है ! वो एक दासी यां दब्बू के रूप में नहीं बल्कि अपने पति की समान रूप से भागीदार और कभी-कभी परिवार के मुखिया के रूप में प्रदर्शित की गयी है ! वो एक व्यावसायिक महिला है, एक मनोवैज्ञानिक और यूनिवर्सिटी में पढ़ाती है ! एक बार टेलीफोन पर बात करते हुए जाकिर अपनी मां से कहता है कि वो ईद पर इस लिए भारत ना आ सके क्यूंकि हसीना का सत्र के मध्य में था ! उसका पति उसकी गतिविधियों पर किसी तरह की पाबंदी नहीं लगाता और उनका सम्बन्ध एक दुसरे के सम्मान पर आधारित है ! एक प्रोफ़ेसर के रूप में उसका भविष्य भी उतना ही महतवपूर्ण है जितना कि एक प्रसाधन सम्बन्धी कंपनी में एक अधिकारी के रूप में उसका अपना ! जब रिज़वान को पकड़ लिया जाता है तो वही मीडिया से बात करती है ! पीले रंग को देखकर रिजवान के व्यवहार और दौरा पड़ने को देख कर उसे एक स्वलीनता रोग के माहिर के पास ले जाना उसकी व्यवसायिक दक्षता ही थी जहाँ पता चला कि वो एस्पर्गर रोग से ग्रसित है ! वो उसे बताती है कि किस तारा एक विडियो कैमरा इस्तेमाल करना है, वो उसके और भय पैदा करने वाले नए अनुभवों के बीच प्रतिरोध का काम करता है और विशेष मानसिक्ता वाली दुनियां में काम करने में उसकी सहायता करती है !

जौर्नल आफ रिलिजियन्न एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

अमरीका में दक्षिण एशियाई माता-पिता (संभवता भारतीय) से जन्मी, वो जाकिर को ये समझाते हुए रिज़वान और जाकिर के बीच मध्यस्थ काम करती है कि उनकी मां को इस बात का आभास था कि रिजवान को किस चीज़ की ज़रुरत है और उसी के कारण वो अच्छे ढंग से काम कर पाता है ! रिज़वान की स्थिति को व्यक्त करने वाले दृश्य में उसके सशक्त पार्श्व स्वर से उसका प्रभुत्व और अधिक स्पष्ट हो जाता है ! पार्श्व स्वर देने वाला रिज़वान की अतिरिक्त वही एक चरित्र है ! हसीना बुद्दिमान, आत्मविश्वासी और दयावान है, उसे अन्य धर्मों और संस्कृतियों के प्रति सहनशील और खुले विचारों वाली के रूप में चित्रित किया गया है ! एक प्रोफ़ेसर के रूप में वो अपने पति से अधिक विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्द्यार्थियों को शिक्षित करती है और लोगों के एक व्यापक वर्ग के संपर्क में आती है ! जबकि जाकिर, रिज़वान को एक हिन्दू से विवाह करने पर अस्वीकार कर देता है, हसीना आश्चर्यचकित रूप से विवाह समारोह में भाग लेती है ! फिल्म में ऐसा कोई भी दृश्य नहीं है जहां वो इस बारे जाकिर के साथ विवाद कर रही है यां कोई तर्क दे रही है यां मंदिरा के धर्म परिवर्तन का सुझाव दे रही हो ! वो बड़े ही साधारण ढंग से हाथों में मिठाई और फूलों वाला थाल लिए आती है और मंदिरा को गले लगा कर बड़े आत्मविश्वास और प्रसन्नता के साथ रिज़वान के पास जाकर उसके परिवार के प्रतिनिधि के रूप में खड़ी हो जाती है ! एक मुस्लिम महिला चरित्र के रूप में वो परम्परा और आधुनिक्ता तथा धर्मनिरपेक्षता और धर्म के बीच की बनावटी लकीर को तोड़ती है ! हसीना हिजाब पहनती है ये तब तक एक साधारण और बिना किसी के ध्यान में आई बात थी जब उसकी युनिवार्सिटी के गलियारे में गुस्से से पागल एक आदमी ये कहते हुए उसे नीचे गिरा देता है कि "तुम लोगों को वापिस अपने घर चले जाना चाहिए !" वो अमरीका में जन्मी एक ऐसे देश की नागरिक है जो धर्म और विचारों की स्वतन्त्रता का समर्थन करता है, उसके घृणापूर्ण आक्षेप में अपने को निरर्थक पाती है ! विचलित हो वो आंसू भरी आँखों से जाकिर के उस सुझाव को मान लेती है कि अगर वो सार्वजनिक तौर पर हिजाब पहनना बंद कर देगी तो अल्लाह उसकी विवशता को समझ जाएगा !

यही वो घटना है जो दोनों भाइयों को फिर से जोड़ देती है, और उन्हें एक परिवार की तरह निकट ले आती है ; दर्शक (कम से कम हिंदी बोलने वाले) एकदम से समझ जाते हैं कि अपने भाई को अस्वीकार करने के लिए जाकिर पछता रहा है और अंत में वो मंदिरा को भाभी (बड़े भाई की पत्नी) कहकर उसे अपने परिवार में स्वीकार करता है ! रिजवान की क़ैद के दौरान, मीडिया के निरंतर प्रचार और रिजवान के अभियान को मिले जन सहयोग को देख हसीना फिर से हिजाब पहनने लगाती है ! वो अपनी कक्षा को बताती है की हिजाब केवल एक धार्मिक अभिव्यक्ति ही नहीं है बल्कि उसके अस्तित्व (वजूद) का सत्य है ; यही वो है जो वो है !

“हम होंगे कामयाब” :भारतीय, मुस्लिम और अफ़्रीकी-अमरीकी

कैद से छूटने के बाद रिजवान को पता चलता है कि उसकी दोस्त ममा जेनी और “फनी हेयर” जोएल का घर, विल्हेमिना-जार्जिया, जबरदस्त समुद्री तूफ़ान की चपेट में आ गया है ! वो राष्ट्रपति से मिलने की तलाश को छोड़ कर विल्हेमिना जा पहुंचता है और देखता है कि उसके ज़ख्मी दोस्त निरंतर, बढ़ रहे बाढ़ के पानी से बचने के लिए एक चर्च में आश्रय लिए हुए हैं, और अधिकरियों द्वारा उपेक्षित उन लोगों के पास ज़रूरी चीज़ों की भारी कमी है ! ये वही चर्च है जहाँ उन लोगों ने “वी शैल ओवर कम” गाया था ! फिल्म निर्माताओं के सन्देश का प्रतीक “वी शैल ओवर कम” बिना सूफी प्रेरणा वाला अकेला ऐसा गीत है जो अमरीकी नागरिक अधिकार अभियान का, संभवता सबसे अधिक प्रसिद्द गान बन चुका है ! हिंदी में अनुवादित “हम होंगे कामयाब”, भारत में भी बड़ा लोकप्रिय है और स्कूलों में राष्ट्रीय एकता की भावना की अभिव्यक्ति, गरीबी पर विजय प्राप्त करने और ब्रिटिश उपनिवेशवाद की तरफ से भारत में पैदा की गयी हीन भावना से उभरने के रूप में सिखाया जाता ! (ये इतना सर्वयापी हो चुका है कि भारत और अमरीका

दोनों देशों में हिंदी की कक्षा में इसके भारतीय स्वरूप को सीखना मुझे भी याद है !) हालांकि, विषय एतिहासिक रूप में पूरी तरह से भिन्न हैं मगर ये गीत अमरीका में अफ्रिकी-अमरिकयों, और भारत और अमरीका के मुसलमानों, और दोनों समुदायों की बाधाओं और संघर्ष के अनुभवों की समानता को उजागर करता है ! फिल्म में जबकि इस तरह के जातिवाद सम्बन्धी रूडिवादी दृश्यों की आलोचना की जा सकती है मगर ये कैटरीना समुद्री तूफ़ान के कारण लुसिआना के गरीब लोगों, अधिकतर अफ़्रीकी-अमरीकी समुदाय के अनुभवों की याद दिलाते हैं ! रिज़वान की दृष्टि में इस ग्रामीण समुदाय के उसके दोस्त “अच्छे लोग हैं जो अच्छे काम करते हैं !” फिल्म निर्माता सभी अफ्रिकी-अमरीकियों को अच्छा और सभी श्वेत अमरीकियों को बुरा प्रदर्शित किये जाने से बचने का पूरा प्रयत्न करते हैं !

जौर्नल आफ रिलिजियन्न एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

जातिवाद का संतुलन बनाए रखने के प्रयत्न में, समीर पर जो बड़े लडके फुटबाल मैदान में हमला करते दिखाए गए हैं उनमें अफरीकन-अमरीकी भी शामिल हैं ! एक और दृश्य में, संभवता फिल्म का सब से अधिक असंगत दृश्य, जिसमे “अफ्रीका के गरीब बच्चों” के लिए धन इकठ्ठा करने वाली ईसाई संस्था में रिज़वान को प्रवेश करने से एक अफ़्रीकी-अमरीकी महिला रोक देती है ! विल्हेमिना में, रिजवान, चर्च के भवन को सुदृढ़ करने और बाढ़ का पानी बाहर निकालने का यंत्र विकसित करने के लिए एक बार फिर से अपने विशेष कौशल का प्रयोग करता है ! एक नाटकीय दृश्य में हसीना और जाकिर की अगुवाई में, भारतीय मुसलमानों का एक दल, बाढ़ के पानी में से अपने लिए रास्ता बनाते हुए, पार्श्व में चल रहे अल्लाह-ए-रहीम (कृपालु ईश्वर) नगमे के साथ, खाने का सामान और दूसरी चीज़ों का भंडार लेकर विल्हेमिना पहुंचता है ! इसी दौरान डाक्टर फैज़ल रहमान, जिसके बारे में रिजवान ने पहले एफ़० बी० आई० को शिकायत की थी, का अनुयायी, आतंकवादी, रिजवान को छुरा घोंप देता है ! वो अभी अपनी चेतना में गोते ही खा रहा होता है कि नये राष्ट्रपति का चुनाव हो जाता है ! पहले अफ्रिकी-अमरीकी के चुनाव को फिल्म में हिंदी और अंग्रेजी मुख्य समाचारों तथा रिपोर्ट्स के रूप में दिखाया जाता है ! इस तरह जब रिजवान अंत में जिस राष्ट्रपति यां चुने गए राष्ट्रपति से भेंट करता है तो वो ओबामा हैं जो उसे बाहर बुलाते हैं, उसे नाम से पुकारते हैं और घोषणा करते हैं कि वो आतंकवादी नहीं है ! इस तरह रिजवान की यात्रा सफलतापूर्वक तरीके से सम्पन्न होती है, वो और मंदिरा घर वापिस लौट जाते हैं !

एर्न्ड्ल: "रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

समापन

आउटलुक टर्निंग पॉइंट्स (2013) में "बींग ए खान" विषय के एक लेख में शाहरुख खान ने लिखा; हम छवि के बारे में अपने ही छोटे घेरों का निर्माण करते हैं ! वर्तमान में ऐसे ही एक घेरे ने अपने ढक्कन को अधिक कसना शुरू कर दिया है ! ये वो घेरा है जिसमे लाखों लोगों के दिलों में मेरे धर्म की छवि है ! मैं परिभाषा के इस कसाव का हर समय सामना करता हूँ, मेरे देश में मुस्लिम समुदाय द्वारा सार्वजनिक तौर पर सयंम प्रदर्शित किये जाने की आवश्यकता है ! जब कभी इस्लाम के नाम पर हिंसा होती है तो मुझे बुलाया जाता है कि इस बारे मैं अपने विचारा सामने रक्खू और ये अभिव्यक्ति प्रगट करू कि एक मुस्लिम होने के नाते मैं इस निरथर्क बर्बरता की निंदा करता हूँ ! हम सभी के विरुद्ध, दूसरे समुदायों द्वारा की जाने वाली किसी भी संभावित प्रतिक्रिया को रोकने के लिए मेरे समुदाय के जिन लोगों आगे आकर बोलने के लिए चुना जाता है मैं उन में से एक हूँ, ऐसा आभास होता है कि धर्म के नाम पर होने वाले अपराध से हमारा सम्बन्ध है यां हम ज़िम्मेदार हैं, इस तरह के अपराधी षड्यंत्रकारियों से हमारा अनुभव इस बारे में पूरी तरह से भिन्न होता है ! उसने अपनी हिन्दू पत्नी और संकरित बच्चों संग पारिवारिक जीवन पर भी ये कहते हुए चर्चा की कि "मेरे और गौरी के बीच केवल हमारी बैठक की दीवारों के रंग को लेकर ही मतभेद हैं ना कि भारत में मंदिरों और मस्जिदों के बीच की दीवारों की स्थिति पर" (खान, 2013) ! एक वैचारिक कार्य के नाते, "माय नेम इज खान" फिल्म, खान के उस पहले वक्तव्य में वर्णित स्थिति को प्रगट करने और समीक्षा किये जाने तथा दूसरे वक्तव्य को आदर्शवादी भावनाओं के रूप में आगे बढाने तथा प्रचारित किये जाने की एक कोशिश है ! मुस्लिम धार्मिक प्रथाओं के उच्च कलात्मक दृश्य एवं ध्वनि चित्रण के माध्यम से फिल्म ये काम करती है, जो विशेष मानसिक स्थिति वाले चरित्र रिजवान का एक अभियान के लिए अपना घर छोड़ने, और यात्रा के दौरान कठिन बाधाओं का सामना करने के बाद, अपना लक्ष्य प्राप्त कर एक परिवर्तित वास्तविकता के साथ घर को लौटने की यात्रा पर केन्द्रित है ! रिजवान और मंदिरा का विवाह, वास्तविक जीवन के पति-पत्नी शाहरुख खान और गौरी की तरह भारत के विभिन्नता वाले लोगों की एकता के लिए और व्यापक रूप में पूरे विश्व के लिए एक आदर्श है ! अपने एक निबंध में, मैनें *माय नेम इज खान* का एक दृश्यात्मक फ़िल्मी पाठ्य-विषय के तौर पर विश्लेषण किया है जिसमे निर्देशक, पटकथा

लेखक, छायाकार, संगीत निर्देशक, और अभिनेताओं के लेखकीय उद्देश्य पर बल दिया गया है ! दर्शकों की स्वीकृति पर शोध, जैसे वर्तमान में पोर्टलैंड,

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म, वॉल्यूम, 20 *[], आईएसएस. 1, आर्टि. 5*
http://digitalcommons.unomaha. इडीयु/जेआरएफ/वॉल्यूम20/ *आईएसएस. 1/ 5*

ऑरेगोन, और नई-दिल्ली भारत में संचार शोध छात्र प्रिया कपूर (2013) द्वारा की जा रहे मानव जाति अध्ययन से इस फिल्म के प्रभाव और इसकी सफलता की श्रेणी का अनुमान लगाने में सहायता मिलेगी ! मैं, अपने अनुमान से कहूँगा कि जब मैनें ये फिल्म, विद्यार्थियों को, जिनमे मुस्लिम अधिक थे, को दिखाई तो उनकी प्रतिक्रिया बड़ी सकारत्मक थी ! लगभग तीन घंटे की फिल्म के बाद बहुत से विद्यार्थी फिल्म पर चर्चा और अपने उन अनुभवों को दोहराने जो फिल्म की भाँती उनके जीवन में घटी घटनाओं से प्राप्त हुए, के लिए 45 मिनट और वहां रुके रहे, ! ये फिल्म जब मैनें अपने अमरीकी, अधिकतर गैर-मुस्लिम विद्यार्थियों को दिखाई तो एक सामान्य प्रतिक्रिया ये थी कि मुसलामानों का उत्पीड़न उनके लिए एक रहस्योद्घाटन था और इस्लाम सम्बन्धी वर्तमान मिथ्या प्रचार के बारे उनका संदेह गहरा हो गया ! इस से फिल्म के उद्देश्य और प्रभाव बारे महत्वपूर्ण प्रश्न पैदा होते हैं ! विश्व के विचारों को अनूठा रूप देने वाली इस फिल्म बारे व्यापक चर्चा के लिए देखें लीडेन (2003) !

एर्न्ड्ल: "रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

बिब्लियोग्राफी

चड्ढा, कल्याणी, एंड आनंदम पी. कावूरी (2008), एक्जोटिसाईज़ड. मारजिनलाईज्ड, डिमोनाईज्ड : दा मुस्लिम “अदर” ईन इंडियन सिनेमा ! ईन आनंदम पी. कावूरी एंड अस्विन पुनाथाम्बेकर (इडीएस.) *ग्लोबल बालीवुड* (पीपी. 131-145). न्यू यॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस ! चोपड़ा, अनुपमा (2007) ! *किंग ऑफ़*

बालीवुड : शाहरुख़ खान एंड दा सेडूक्टिव वर्ल्ड ऑफ़ इंडियन सिनेमा ! न्यू यॉर्क वार्नर ! देसाई, जिगना एंड राजुंदर दुद्राह (इडीएस.) ! (2008) ! *दा बालीवुड रीडर* ! न्यू यॉर्क ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस ! डव्येर, राचेल (2006) ! *फिल्मिंग दा गाड्ज़ : रिलिजियन एंड इंडियन सिनेमा !* न्यू यॉर्क रौट्लेज ! डव्येर, राचेल (2014) ! *बालीवुड'ज़ इंडिया : हिंदी सिनेमा एज़ ए गाइड टू कन्टेम्पोरेरी इंडिया !* लन्दन : रेअक्तिओन ! गन्ती, तेजस्विनी (2013) ! *बालीवुड : ए गाइड टू पॉपुलर हिंदी सिनेमा* ! दूसरा एडिशन ! न्यू यॉर्क रौत्लेज !

गन्ती, तेजस्विनी (2012) ! प्रोडयूसिंग *बालीवुड : इनसाइड दा कन्टेम्पोरेरी हिंदी फिल्म इंडस्ट्री* ! दुर्हम : ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस !
गहलावत, अजय (2010) ! *रेफ्रेमिंग बालीवुड : थ्यूरीज़ ऑफ़ पॉपुलर हिंदी सिनेमा* ! न्यू-दिल्ली सेज पब्लिकेशनज़ ! गाट्स्चाल्क, पीटर एंड गेब्रियल ग्रीनबर्ग (2007) ! *इस्लामोफोबिया : मेकिंग मुस्लिम्ज़ दा एनिमी !* न्यू यॉर्क रोवान एंड लिटिलफिल्ड ! ग्रीन, टॉड (2015) ! *दा फीयर ऑफ़ इस्लाम : एन इंट्रोडक्शन टू इस्लामोफोबिया इन दा वेस्ट !* मिनियापोलिस : फोर्ट्रेस प्रेस !
हिन्दू नेशनलिस्ट हेल्ड आफ्टर प्रोटेस्टस एट "प्रो-पाकिस्तानी" बालीवुड स्टार (2010, फेब, 10) ! दा गार्डियन,

रिट्राइव्ड एट http://www.theguardian.com/world/2010/feb/10/ hindu-nationalists-shahrukhkhan-shiv-sena.

जैन, जसबीर (ईडी.) (2011) ! *मुस्लिम कल्चर इन इंडियन सिनेमा !* जयपुर : रावत पब्लिकेशनज़ ! जैन, पंकज (2011) ! फ्रॉम पड़ोसी टू माय नेम इज खान : दा पोर्ट्रेयाल ऑफ़ हिन्दू-मुस्लिम रिलेशंज़ इन साउथ एशियन फिल्म्ज़ ! *विजुअल एंथ्रोपोलॉजी,* 24 (4), 345-363

एन्ईल: "रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ

कपूर, प्रिया (2013) ! *माय नेम इज खान : मीडिया एथ्नोग्रफी एमंग मुस्लिम यूथ* ! अनपब्लिश्ड रिसर्च प्रपोजल ! खान शाहरुख (2013) बींग ए खान ! *आउटलुक टर्निंग पॉइंट्स !* लाल, विनय (1998) ! दा इम्पोस्सिबिलिटी ऑफ़ दा आउटसाइडर इन मॉडर्न हिंदी फिल्म ! इन आशीष नंदी (इडी.), *दा सीक्रेट पॉलिटिक्स ऑफ़ अवर डिज़ायर्ज़ : इन्नोसेंस, कल्पेबिलिटी एंड इंडियन पॉपुलर सिनेमा* (पीपीपी. 228-259) ! लन्दन ज़ेड बुक्स ! लिडेन, जॉन (2003) ! *फिल्म एज़ रिलिजियन : मिथ, मोरल्ज़ एंड रिचुअल्ज़ !* न्यू यॉर्क : एन वाई यू प्रेस !
लुट्जेंदोर्फ. फिलिप (2006) ! इज देयर एन इंडियन वे ऑफ़ फिल्ममेकिंग ? *इंटरनेशनल जौर्नल ऑफ़ हिन्दू स्टडीज ! 10 (3),* 227-256 ! मिश्र, विजय (2001) ! *बालीवुड सिनेमा : टेम्पल्ज़ ऑफ़ डिज़ायर !* लन्दन रौट्लेज !
मरपक्वर, प्रफुल्ल एंड भारती दुबे (2010 अगस्त, 13) ! मुंबई काल्ज़ सेना ब्लफ एज़ एम एन आई के ओपन्ज़ टू फुल हाउस ! *टाइम्स ऑफ़ इंडिया* ! रीट्राईव्ड एट

टाइम्सऑफ़इंडिया.इंडियाटाइम्स.काम/सिटी/मुंबई/मुंबई-काल्ज़-सेना-ब्लफ-एज़-एमएन आईकेओपन्ज़-टू-फुल-हाउस/आर्टिकलशो/5566662.सीएमएस.

राजाध्यक्ष, आशीष एन पॉल विल्लेमेन, (1999) ! *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन सिनेमा*, न्यू रीवाइज्ड एडिशन ! न्यू दिल्ली : ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस !
सरकार, भास्कर (2009) ! *मौर्निंग दा नेशन : इंडियन सिनेमा इन दा वेक ऑफ़ पार्टीशन !* दुर्हम : ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस ! शाहरुख डिटेंड एट यू एस एअरपोर्ट फार बींग ए खान (2009, अगस्त, 15) *हिंदुस्तान टाइम्स* !

रीट्राईव्ड एट http://www.hindustantimes.com/entertainment/shah-rukh-detainedat-us-airport-for-being-a-khan/article1-443511.aspx.

टर्नर, विक्टर (1969) ! *दा रिचुअल प्रोसेस : स्ट्रक्चर एंड एंटी-स्ट्रक्चर !* शिकागो : अल्डाइन ! टर्नर, विक्टर (1974) ! *ड्रामाज़ फील्डज़ एंड मेटाफोरज़ : सिंबॉलिक एक्शन इन ह्यूमेन सोसाइटी !* इथाका : कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस !

विस्वानाथन, गीता (2011) ! दा स्टार, दा रोल, एंड दा स्पेक्टेटर : शाहरुख़ खान'ज़ रेकाल्सिट्रांट मुस्लिम आइडेंटिटी ! इन जसबीर जैन (इडी.) पीपी. 74-91 ! *मुस्लिम कल्चर इन इंडियन सिनेमा !* जयपुर : रावत पब्लिकेशनज़ !
वी दा पीपल : बिंग मुस्लिम इन टूडेज़ इंडिया (2010, मार्च, 8) ! न्यू दिल्ली : एनडीटीवी !

एन्ईल: "रिलिजियस एंड नेशनल ईडेंटटी इन माय नेम इस खान,"

पब्लिषड डिजिटल कामनज़@यूएनओ